षोडशी महाविद्या
(श्री महात्रिपुर सुन्दरी साधना,
श्री यन्त्र पूजन पद्धति एवं स्तवन)
DYNAMIC
Read Dynamic !
To Be Dynamic !!
योगेश्वरानन्द

"षोडशी महाविद्या"

(श्री महात्रिपुरसुन्दरी साधना, श्रीयन्त्र पूजन पद्धति एवं स्तवन)

उन परम् पवित्र श्रीगुरुपादारविन्दयुगल में एक और
समर्पण, जिनकी कृपा के अभाव में यह
प्रयास एक दिवाः स्वप्न
ही रहता।

लेखक एवं संङ्कलयिता
योगेश्वरानन्द

डायनेमिक पब्लिकेशंस (इंडिया) लि॰
• मेरठ • दिल्ली

षोडशी महाविद्या

(श्री महात्रिपुरसुन्दरी साधना, श्रीयन्त्र पूजन पद्धति एवं स्तवन)

चेतावनी

श्री वृद्धि और सुख-शान्ति के लिये मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र साधनाओं का विशेष महत्व है। परन्तु यदि किसी साधक को प्रस्तुत पुस्तक में दी गयी साधना के प्रयोग में विधिगत, वस्तुगत अशुद्धता अथवा त्रुटि के कारण किसी भी प्रकार की क्लेशजनक हानि होती है, अथवा कोई अनिष्ट होता है तो इसका उत्तरदायित्व स्वयं उसी का होगा। लेखक, प्रकाशक एवं मुद्रक उसके लिये उत्तरदायी नहीं होंगे। अतः कोई भी प्रयोग योग्य व्यक्ति के संरक्षण में ही करें।

Dynamic Publications (India) Ltd.

H.O.: KRISHNA HOUSE, 11, Shivaji Road, Meerut -250001.
Ph.: 91-121-2644766, 2642946 Fax:91-121-2645855
C.O.: KRISHNA HOUSE, 11-Ansari Road, Street No.2, Darya Ganj, Delhi.
Ph.: 011-51563457-460
visit us at : www.krishnaprakashan.com
e-mail : sk_kpm@yahoo.com

First Published by : **KRISHNA Prakashan Media (P) Ltd. 2006**

Text : Yogeshwranand

Book Code No. : Q272-1

ISBN : 81-7933-192-X

Text Designed by : Vivek Computers, Meerut

Cover Designed by : ZIUS Graphic Arts, Meerut

Rate : Rs. 250.00 only

त्रिपुर सुन्दरी-साधना क्यों करें?

भगवती त्रिपुरी सुन्दरी की साधना मानव जीवन की सर्वोच्च और सर्वश्रेष्ठ साधना है। अनेक साधकों, गृहस्थों, सन्यासियों ने हृदय से स्वीकार किया है कि त्रिपुर सुन्दरी-साधना कलियुग में 'कामधेनु' के समान है, जो फलीभूत होती ही है। यह एक ऐसी साधना है जो साधक को इसी जीवन में पूर्ण मान-सम्मान, पद और प्रतिष्ठा तो दिलाती ही है, साथ ही साथ उसका व्यक्तित्व भी इतना आकर्षक हो जाता है कि शत्रु भी उसकी प्रशंसा करने लगते हैं। एक स्थान पर स्वयं आद्य शङ्कराचार्य ने कहा है कि–'मेरे सम्पूर्ण साधना जीवन का सारांश यह है कि संसार की समस्त साधनाओं में त्रिपुर सुन्दरी साधना स्वयं में पूर्ण है, अलौकिक है, अद्वितीय है और आश्चर्यजनक रूप से सिद्धि प्रदान करने वाली है।' सचमुच ही इस साधना के समान विश्व में दूसरी कोई साधना नहीं है।

त्रिपुर सुन्दरी साधना की आवश्यकता क्यों है?

त्रिपुर सुन्दरी साधना के लिये किसी भी आयु, वर्ग अथवा जाति का साधक अपेक्षित है। इस साधना को कोई भी व्यक्ति कर सकता है। स्त्री वर्ग के विषय में तो स्पष्ट रूप से कहा गया है कि–'यदि स्त्री साधिका केवल पूर्णमासी की रात्रि को ही इस साधना को सम्पन्न कर ले तो वह विश्व की विजेता बन जाती है। उसे फिर कुछ भी करने की आवश्यकता नहीं।' इस साधना को सम्पन्न करने से व्यक्ति को अनेकों लाभ प्राप्त होते हैं, यथा–

1. भगवती षोडशी के साक्षात दर्शन।
2. जीवन की पूर्णता प्राप्त करना।
3. वाद-विवाद और मुकदमों में विजय प्राप्ति।
4. शत्रुओं पर विजय प्राप्त करके अपने वशीभूत करना।
5. राजा अथवा अधिकारी का वशीकरण, जो साधक की इच्छानुसार कार्य करे।

6. मानसिक सुख प्राप्ति, बाधाओं से मुक्ति।
7. सन्तान प्राप्ति और आज्ञाकारी पुत्र एवं पत्नि की प्राप्ति।
8. अखण्ड सौभाग्य की प्राप्ति।
9. कन्या का शीघ्र विवाह और मनोवांछित वर की प्राप्ति।
10. मकान, भूमि और वाहन सुख की प्राप्ति।
11. ऋण से मुक्ति।
12. ऐश्वर्य, चल-अचल सम्पत्ति और पशु-धन की प्राप्ति।
13. कुण्डलिनी जागरण द्वारा आन्तरिक शक्ति का जागरण।
14. राज्य-भय, कारावास से मुक्ति और सभी संकटों का शमन।
15. पति-पत्नि-परिवार में आनन्ददायक क्रिया-कलापों का प्रारम्भ हो जाना।
16. क्रोध का शमन व उग्र-स्वभाव की शान्ति।

उपर्युक्त तथ्यों से स्पष्ट हो जाता है कि वास्तव में जीवन की सम्पूर्णता केवल इसी साधना को सम्पन्न करने से प्राप्त होने लगती है। इसमें विशेष तथ्य यह है कि इस साधना के लिये आपकों कहीं अन्यत्र जाने की आवश्यकता नहीं है, अपितु यह अपने घर में बैठकर भी सम्पन्न की जा सकती है।

अतः यदि आप भी जीवन के साथ भोग और मोक्ष की इच्छा रखते हैं, तो कम से कम एक बार इस साधना को अवश्य ही करें। जीवन में होने वाले परिवर्तनों से आप स्वयं ही हतप्रभ रह जायेंगे।

योगेश्वरानन्द

"दो शब्द"

॥ श्रीः ॥

॥ श्री गुं गुरुभ्यो नमः । श्री गणेशाय: नमः ॥

श्री ललितामहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः

त्वं पिता, त्वं च मे माता, त्वं बन्धु त्वं च देवता।
त्वं मोक्ष प्राप्ति हेतुश्च, तस्मै श्री गुरवे नमः॥

श्री गुरु पादारविन्दयुगल की वन्दना करते हुए, पराम्बा षोडशी के कृपा पात्र **श्री रामस्वरूप जी** की, परमपावन मूर्ति स्वरूप को मन की अनन्त गहराईयों से मैं नमन करता हूँ। उन्हीं परमाराध्य के आशीष स्वरूप, मैं माँ पराम्बा, षोडशी की पूजन प्रक्रिया पर लेखनी चलाने का साहस दिखा सका हूँ।

श्री विद्या, महात्रिपुरसुन्दरी, ललिता, षोडशी आदि माँ आद्याशक्ति के ही स्वरूप हैं, जो दस महाविद्याओं में तृतीय महाविद्या हैं।

यह विषय एक अनन्त सागर के समान है, और साथ ही बहुत गहन भी और मैं एक मूढ़ सा, अज्ञानी सा, एक सामान्य साधक मात्र हूँ। शक्ति-तत्व की विवेचना करने में तो बड़े-बड़े साधक स्वयं को तुच्छ, अल्पज्ञ मानते रहे हैं, अपने वृहत् जीवन को भी अल्प समय मानते हुये उन्होंने इस तत्व की विवेचना करने में सर्वथा असमर्थता जताई है, परन्तु फिर भी मेरा भरसक प्रयास यही रहा है कि अधिकाधिक प्रकाश इस विषय पर डाल सकूं।

"श्रीयन्त्र" पूजा भगवती आद्याशक्ति त्रिपुर सुन्दरी की ही पूजा है। यही श्री विद्या भी है। श्रीयन्त्र के विषय में सामान्य पाठकों/साधकों ने बहुत कुछ सुना होगा, पढ़ा होगा और महसूस भी किया होगा कि मानव जीवन में श्रीयन्त्र-उपासना का कितना अधिक महत्व है। यह साधना ही मानव जीवन का परम लक्ष्य है।

अन्य साधनाओं के करने से, या तो भोग की प्राप्ति होती है अथवा मोक्ष की, लेकिन माँ षोडशी अपने उपासकों को जीवनपर्यन्त भोग प्रदान करती हैं और मृत्योपरान्त मोक्ष देने वाली हैं। यथा-

"यत्रास्ति भोगो नहि तत्र मोक्षो
यत्रास्ति मोक्षो नहि तत्र भोगः।
श्री सुन्दरीसाधन तत्पराणां
भोगश्च मोक्षश्च करस्थ एवं॥"

मनुष्य को जीवन चलाने के लिये धन की आवश्यकता होती है, ईश्वर पूजा, हवन आदि के लिये भी धन की आवश्यकता होती है; सांसारिक कृत्यों की पूर्ति हेतु धनापूर्ति एक आवश्यक अङ्ग है। साथ ही मृत्यु के उपरान्त उसे मोक्ष की कामना होती है। इन सब कार्यों के लिये भगवती ललिता की उपासना ही एक मात्र विकल्प उपलब्ध है।

इनकी आराधना के लिये कोई वर्ग विशेष ही अधिकारी नहीं है। केवल गुरु और देव पूजा में शुद्ध-बुद्धि रखने वाले सभी वर्णों के लोगों को इनकी उपासना का अधिकार प्राप्त है। यथा–

ब्रह्मक्षत्रविशः शूद्रा अचार्यां शुद्धबुद्धयः।

गुरुदेव द्विजाचार्यसु रताः स्युरधिकारणः॥

इस प्रकार इस उपासना प्रक्रिया को कोई भी, किसी भी वर्ण का व्यक्ति ग्रहण कर सकता है, लेकिन यह विद्या पूर्णतः गुरुगम्य है, अर्थात् गुरुमुख से इस साधना का ज्ञान प्राप्त किया जाता है, क्योंकि यह अत्यन्त गूढ़ विद्या है। इस विद्या का महत्व बताते हुये ब्रह्माण्डपुराण में कहा गया है कि–

येनान्यदेवतानाम् कीर्तितं जन्मकोटिषु।

तस्यैव भवति श्रद्धा श्रीदेवीनाम कीर्तने॥

अर्थात् जिसने कोटि जन्मों में कठोर साधना की हो, उसे ही **"श्री"** विद्या की आराधना का सौभाग्य प्राप्त होता है। यह उपासना भोगदा और मोक्षदा दोनों है–**'भोगाय तु मोक्षाय ललिता तू भयप्रदा'।**

यद्यपि इस सन्दर्भ में अनेक पद्धतियाँ तथा संग्रह उपलब्ध हैं, परन्तु अभी तक एक भी ऐसा संकलन उपलब्ध नहीं हो सका है, जिसमें **"सपर्या पद्धति"** व आराधना स्त्रोत एक ही पुस्तक में उपलब्ध होकर साधकों के लिये सहायताप्रद हो सके। इसके अतिरिक्त अभी तक सभी पद्धतियाँ संस्कृत भाषा में प्रकाशित हैं, जो सामान्य साधकों के लिये अत्यन्त कठिनाई उत्पन्न कर देती है। एक तो यह विद्या वैसे ही गूढ़ व कठिन है, हिन्दी भाषा में पुस्तक की अनुपलब्धता इसे और भी श्रमसाध्य बना देती है। इस पुस्तक के उपलब्ध हो जाने से साधकगण वास्तव में सुविधा महसूस करेंगे, ऐसा मेरा विश्वास है।

प्रस्तुत ग्रन्थ में **"सपर्या पद्धति"** के साथ-साथ स्तोत्रों की उपलब्धता से निश्चय ही इसकी उपयोगिता बहुत अधिक बढ़ गयी है। पूजन पद्धति में स्थान-स्थान पर आवश्यक निर्देश भी हिन्दी भाषा में दिये गये हैं, जो साधकों के लिये बहुत ही सुविधाजनक होंगे।

मुझे आशा ही नहीं, अपितु पूर्ण विश्वास है कि साधकगण इन दो शब्दों को ही अर्णव मानते हुये, इस ग्रन्थ में

प्रस्तुत की गयी पूजा पद्धति, स्तोत्रों व निर्देशों का पालन करते हुये और श्री गुरु चरणों में ध्यान लगाते हुये श्री विद्या-उपासना में सफलता प्राप्त कर, माँ आद्याशक्ति के कृपापात्र बन सकेंगे।

यद्यपि इस ग्रन्थ की रचना, संकलन, सम्पादन व व्याख्या करने में मेरे द्वारा पूर्ण सतर्कता रखी गयी है, और यथा शक्ति प्रयास किया गया है कि कहीं भी कोई भी त्रुटि न होने पाये, परन्तु मानव से त्रुटि हो जाना सम्भव है और स्वाभाविक भी, इसलिये यदि अज्ञानवश कहीं कोई त्रुटि रह गयी हो तो विद्वजनों से मेरा विनम्र अनुरोध है कि मुझे उसके विषय में जानकारी देते हुये, क्षमा करें। अन्ततः श्री गुरु की अनुमति व उनके आशीष से प्रकाशित यह ग्रन्थ यदि श्रीविद्या उपासकों के लिये मार्गदर्शक बन सका तो मेरा श्रम, सफल होकर गौरवान्वित होगा।

साथ ही साधकों से मेरा निवेदन है कि यह विद्या अत्यन्त गुप्त है, गूढ़ है और साथ ही गुरुगम्य भी। अतः योग्य गुरु से दीक्षा ग्रहण कर ही इस विद्या की उपासना करें, क्योंकि गुरु परम्परा से प्राप्त इस विद्या से अति उत्तम फल प्राप्त होते हैं। यदि कोई छल से इस विद्या को प्राप्त करके अपने ज्ञान के गर्व से इसका जप करता है तो उसे लाभ के स्थान पर हानि ही प्राप्त होगी, यथा–

"पारम्पर्यविहीना ये ज्ञानमात्रेण गर्विताः।

तेषां समयलोपेन विकुर्वन्ति मरीचयः।।"

अब मैं अपने गुरुदेव श्री रामस्वरूप जी का हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ, जिनकी कृपा के बिना यह ग्रन्थ किसी भी दशा में पूर्ण नहीं हो सकता था। साथ ही मैं अपने द्वारा की गयी धृष्टता के लिये भी क्षमा प्रार्थी हूँ, जो मैंने इस ग्रन्थ के लिखते समय की है। इस ग्रन्थ के लिखने में मेरे द्वारा समय सीमा का कोई बन्धन नहीं रखा गया। सारी-सारी रात्रि में जागकर मैंने इसे पूर्ण किया है। जब भी मुझे कोई समस्या होती, मैं गुरुदेव के समक्ष उपस्थित हो जाता। तब वे ही उसका निदान करते। रात्रि को कभी ग्यारह बजे, कभी बारह बजे भी मैं फोन कर देता, तो वे प्रेरणा-श्रोत बनते हुये मेरी समस्याओं का समाधान करते। कभी-कभी बनावटी उपेक्षा या क्रोध भी दर्शा देते; परन्तु मैं भी अल्पज्ञ, अज्ञानी की भाँति उनसे कुछ ना कुछ ज्ञान लेता ही रहा हूँ। बहुत क्रोधी बनते हुये भी उनके स्नेह की पूर्ण घनी छाया सदैव मेरे सिर पर बनी रही है। मेरे "परम गुरु" अनन्त भी विभूषित ज्योतिष्पीठाधीश्वर एवं द्वारका शारदापीठाधीश्वर जगद्गुरु शङ्कराचार्य स्वामी श्री स्वरूपानन्द सरस्वती जी महाराज के प्रिय ब्रह्मचारी शिष्य श्री रामस्वरूप जी, व्यवस्थापक, श्रीमज्जगद्गुरु शङ्कराचार्य आश्रम, पक्का घाट, बागपत (उ0प्र0) भगवती राजराजेश्वरी व माता बगलामुखी के अनन्य उपासक हैं। इन शक्तियों की उनपर पूर्ण कृपा बनी हुई है। मुझ स्वार्थी ने उन्हीं श्रीगुरू-चरणों में मस्तक नवाकर इन महाशक्तियों का तुच्छ सा ज्ञान प्राप्त किया है, जिसे आप तक पहुँचाने का यथा-सम्भव प्रयास किया है।

सम्बन्धित ग्रन्थों की प्राप्ति भी मुझे पूज्य गुरूदेव से ही प्राप्त हुई। सम्भवतया आप भी परिचित होंगे कि गूढ़ विद्याओं की प्राचीन पुस्तकों का अमूल्य खजाना आज भी सर्वाधिक श्री गुरुदेव के पास ही है। गुरु कृपा के अतिरिक्त वे पुस्तकें भी इस ग्रन्थ की पूर्णता में विशिष्ट अङ्ग रही हैं।

अन्त में यही कहूँगा कि भगवती राजराजेश्वरी की करुणामयी कृपा से व श्री गुरू के आशीष से ही यह ग्रन्थ पूर्ण हो पाया है। अन्यथा मुझ जैसे क्षुद्र, अज्ञानी की यह स्थिति कहाँ, जो ऐसी गुह्य, गहन और जटिल विद्या के विषय में कुछ लिखने भर का भी साहस कर सके। यदि मेरे द्वारा भगवती पराम्बा श्री महात्रिपुरसुन्दरी की पूजा-पद्धति प्रकट करने में कहीं कोई मर्यादा अतिक्रमण हो गया हो तो माँ, जगद् जननी से मेरी यही विनती है कि–

"मत्समः पातकी नास्ति पापघ्नी त्वत्समा नहि।

एवं ज्ञात्वा महादेवि! यथायोग्यं तथा कुरु॥"

अब, इन्हीं शब्दों के साथ...............

योगेश्वरानन्द

सम्पर्क सूत्र–

श्री रामस्वरूप ब्रह्मचारी (व्यवस्थापक)

श्रीमज्जगद्गुरु शङ्कराचार्य आश्रम,

पक्का घाट, बागपत (उ०प्र०) २५०४०१

दूरभाष–०१२१-२२२००७० (निवास)

०१२१-२२२२०३१ (आश्रम)

अनन्त श्री विभूषित ज्योतिषपीठ एवं द्वारका शारदापीठाधीश्वर जगद्‌गुरु शंकराचार्य स्वामी श्री स्वरूपानन्द सरस्वती जी महाराज के पुत्र सम ब्रह्मचारी श्री रामस्वरूप जी की ओर से—

मङ्गल-कामना

अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड जननी, अनन्त कल्याणमयी भगवती पराम्बा ही इस सम्पूर्ण विश्व का उपादान और अधिष्ठान है। यह विश्व उन्हीं से परिव्याप्त है। भगवती राजराजेश्वरी दश-महाविद्याओं में से एक है, जो भोग और मोक्ष दोनों ही प्रदान करने वाली है। यही इस विश्व की जननी हैं। सम्पूर्ण जगत की गतिविधियाँ इन्हीं देवी से नियंत्रित और संचालित हैं। यही शक्ति, महाशक्ति, पराशक्ति, चित्त-शक्ति, चैतन्य शक्ति आदि अनेक नामों से विवेचित हुई हैं। इन्हीं शक्ति की महिमा सर्वोपरि प्रतिष्ठित है। वे ही परमशक्ति हैं और शिव सहित सभी देव उनसे अपनी शक्ति प्राप्त करते हैं।

शक्ति सक्रियता का प्रतीक है। शाक्त सम्प्रदाय के अनुसार 'शिव' में जो इकार है, वह शक्ति का प्रतीक है, जिसके बिना 'शिव' भी 'शव' के समान निष्क्रिय हो जाते हैं, इसलिये शिव और शक्ति को अभिन्न माना गया है। **"न शिवेन विना शक्तिर्न शक्तिरहितः शिवः"** कौलज्ञान निर्णय के इस श्लोक से भी यही सिद्ध होता है।

वस्तुतः महाशक्ति ही परब्रह्म परमात्मा हैं, जो विभिन्न रूपों में विविध लीलायें करती हैं, इन्हीं की शक्ति से ब्रह्मा विश्व की उत्पत्ति करते हैं, विष्णु विश्व का पालन करते हैं और इन्हीं की शक्ति से शिव जगत का संहार करते हैं। अर्थात् ये ही सृजन, पालन और संहार करने वाली आद्याशक्ति हैं। ये ही शक्तिमान् और ये ही शक्ति हैं। समस्त विश्व महाशक्ति का ही विलास है। भगवती स्वयं कहती हैं—**सर्वं खल्विदमेवाहं नान्यदस्ति सनातनम्"** अर्थात् समस्त विश्व मैं ही हूँ। मुझसे अतिरिक्त दूसरा कोई भी सनातन या अविनाशी तत्व नहीं है।

भगवती त्रिपुरा की उपासना से सद्यः फल की प्राप्ति होती है। माँ राजराजेश्वरी अपने भक्तों को भोग और मोक्ष दोनों ही एक साथ प्रदान करने वाली हैं, जबकि सामान्यतः दोनों का साहचर्य नहीं मिलता। जहाँ भोग मिलता है, वहाँ मोक्ष नहीं और जहाँ मोक्ष मिलता है वहाँ भोग नहीं मिलता, परन्तु माँ राजराजेश्वरी, महात्रिपुरसुन्दरी के साधकों के लिये दोनों एक साथ ही सुलभ हैं।

सभी शंकरपीठों में माँ त्रिपुरसुन्दरी की उपासना **'श्रीयन्त्र'** में होती है, जिसे **"श्री चक्र"** भी कहा जाता है। यही श्रीचक्र शिव और शिवा दोनों का शरीर है। इस आराधना के शुरु में भूमि-शुद्धि, भूत-शुद्धि करके शरीर में विभिन्न न्यासों के द्वारा साधक स्वशरीर को देववत् करने हेतु मन्त्रमय बनाता है। पात्रासादन करके पूजन हेतु रखे गये द्रव्यों की शुद्धि करता है। फिर विभिन्न आयामों से होते हुये त्रिकोण में स्थित बिन्दु, जहाँ शिव और शक्ति का सङ्गम होता है, वहाँ पूजन करता है। इस बिन्दु पर शक्ति और शिव एक हो जाते हैं, जिनके अमृत वर्षण से साधक का अन्तर्मन तृप्त हो जाता है।

इस साधना में सुषुम्ना के भीतर मूलाधार से लेकर ब्रह्मरन्ध्र तक अलौकिक दिव्य तेजपुञ्ज में अधः सहस्रार, विषुव, मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूर, अनाहत, विशुद्धि व आज्ञा-इन नौ चक्रों में श्रीयन्त्र के नौ आवरण-देवताओं की, पञ्चतत्वों के सार से पूजन करके, समस्त देवताओं और उपचारों की भगवती के चरणों में विलय भावना की जाती है, और उन्हें अपनी आत्मा में भी विलय किया जाता है। फिर उन्हीं देवताओं को ब्रह्मरन्ध्र से पुष्प द्वारा श्रीयन्त्र में स्थापित कर यथोपचारों द्वारा पूजन करके तत्वशोधन किया जाता है। अन्ततः इस क्रिया द्वारा ब्रह्म से जगत की उत्पत्ति और ब्रह्म में ही उसके विलय का ध्यान स्वतः ही हो जाता है।

योगीजन के अनुसार माँ ललिता ही कुण्डलिनि स्वरूपा हैं, जो मूलाधार में पृथ्वीतत्व, मणिपूर में जल तत्व, स्वाधिष्ठान में अग्नि तत्व, अनाहत में वायु तत्व, विशुद्धि में आकाशतत्व और आज्ञा चक्र में मनस्तत्व को पार करके सहस्रार में अपने पति परमशिव के साथ एकान्त में विहार करती हैं।

ऐसी करुणामयी, कल्याणमयी, श्रीयन्त्र (श्रीचक्र) निवासिनी, श्री चक्रनगर साम्राज्ञी, महाभट्टारिका, माँ त्रिपुराम्बा की उपासना सभी के लिये कल्याणकारी है।

अब तक जो विद्या शंकरपीठों की ही धरोहर थी, आज उसे सर्वसुलभ बनाने की दिशा में मेरे परम अनुयायी श्री योगेश्वरानन्द द्वारा जो अथक प्रयास किया गया है, उससे मेरा हृदय अत्यन्त आह्लादित हो रहा है, ठीक वैसे ही जैसे-उस समय हुआ था, जब मेरे पूज्य गुरुदेव अनन्त श्री विभूषित उत्तराम्नाय पश्चिमाम्नाय ज्योति व पीठाधीश्वर एवं श्री द्वारकापीठाधीश्वर जगद्गुरु शङ्कराचार्य स्वामी श्री स्वरूपानन्द सरस्वती जी महाराज ने मुझे इस विद्या का ज्ञान प्रदान किया था।

आज जन साधारण भी **'श्रीयन्त्र'** के नाम से परिचित हैं। विभिन्न श्रोतों द्वारा जन-जन को इस यन्त्र की उपयोगिता का ज्ञान हो गया है; परन्तु अधिकांश लोगों को इसकी पूजा-पद्धति के विषय में तनिक भी जानकारी नहीं है। यहाँ मैं आपको इस तथ्य से भी अवगत कराना चाहूंगा कि बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ से ही विश्व के अनेक विद्वानों का ध्यान श्रीयन्त्र की ओर हो गया था। मास्को (रुस) में आज भी इस विषय पर शोधकार्य चल रहा है। मास्को राज्य विश्वविद्यालय में भौतिक शास्त्र और गणित विषय के शोधार्थी अलेक्सेई कुलाईचेव ने श्रीयन्त्र के सम्बन्ध में गहनशोध और कम्प्यूटर के प्रयोग से जो निष्कर्ष निकाला है उसका नाम **"अल्गारिद्य"** रखा है। उनके द्वारा प्रस्तुत तथ्य इसकी पुष्टि करते हैं कि प्राचीन भारत का गणितीय चिन्तन अब तक लगाये गये अनुमानों से कहीं अधिक गहन और जटिल था। उन्होंने यह भी सिद्ध किया है कि श्रीयन्त्र का प्रचार ईसा से एक हजार वर्ष पहले तक भारतवर्ष में था। इसका प्रचार नेपाल, चीन, जापान और तिब्बत में भी हुआ। उनका यह भी कथन है कि इस दुर्लभ ज्यामितीय रेखाकृति (श्रीयन्त्र) का प्राचीन ज्यामितीय और दार्शनिक शिक्षा से गहन सम्बन्ध है। ब्रह्माण्ड के सार्वभौतिक सिद्धान्त के साथ श्रीयन्त्र की आश्चर्यपूर्ण संनिकटता है।

ऐसे ही सोवियत प्राच्यविद् **डा० देगा दे ओपिक** के अनुसार, "श्रीयन्त्र में ऐसे कई पेचीदे गुण धर्म हैं, जो आधुनिक विज्ञान के लिये भी समस्या प्रस्तुत करते हैं। विशेषरूप से इसके उद्भव, तिथि-निर्धारण, संसृति-विज्ञान और मानवशास्त्र की अवधारणाओं से इसके सम्बन्ध का विश्लेषण ऐसी पहेली है, जिसे सुलझाने के लिये इतिहासकारों, मानवशास्त्रियों और गणितज्ञों के संयुक्त प्रयास की आवश्यकता है।"

साधकगण को इन उपर्युक्त कथनों से ही श्रीयन्त्र की महत्ता का ज्ञान हो गया होगा। इसकी गूढ़ता तो स्वतः ही स्पष्ट हो जाती है।

इस विद्या को **"श्रीविद्या"** का नाम दिया गया है। **"श्रीयन्त्र"** इस पूजा का अभिन्न अङ्ग है। इस विद्या को सत्तर करोड़ मन्त्रों का सार माना जाता है। वेद विद्या के मन्त्र प्रकट हैं, जबकि यह विद्या गुप्त है। इस विद्या के ज्ञान मात्र से ही भव-बन्धन से छुटकारा, स्मरण से पाप-पुञ्ज का हरण, जप से मृत्यु-नाश, पूजा से दुःख, दुर्भाग्य-व्याधि, दरिद्रता, ध्यान से समस्त कार्यों का साधन और होम करने से समस्त विघ्नों का नाश हो जाता है; इसके समान या इससे उत्तम कोई दूसरी विद्या नहीं है।

श्री योगेश्वरानन्द द्वारा ऐसी जटिल, दुर्गम और गुप्त विद्या पर प्रस्तुत की गयी इस अमूल्य धरोहर के परिशीलन व प्रयोगात्मक स्वरूप का ज्ञान प्राप्त कर निश्चय ही साधक वर्ग को सम्पूर्णता का भान होगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

मेरी शुभेच्छा है कि प्रस्तुत ग्रन्थ से साधकों को एक नयी चेतना, प्रेरणा और जीवंतता प्राप्त हो, जो उन्हें पराम्बा माँ राजराजेश्वरी की कृपा का सानिध्य करा सके और उन्हें भुक्ति-मुक्ति दोनों ही प्राप्त करने की ओर अग्रसर कर सके। इस ग्रन्थ के परिशीलन से प्रबुद्ध साधक भी मन से स्वीकार करेंगे कि लेखक ने कितना कठिन परिश्रम करके इस पुस्तक में प्रस्तुत पद्धति का प्रस्तुतीकरण किया है। साथ ही यह भी कि इसका प्रस्तुतीकरण अत्यन्त सरल ढंग से किया है।

अन्त में इस ग्रन्थ के रचियता और मेरे परम अनुयायी श्री योगेश्वरानन्द के लिये मेरा हार्दिक आशीर्वाद। भगवती राजराजेश्वरी की कृपा सदैव उन पर बनी रहे, और उन्हें ऐसे ही शुद्ध, सुन्दर व दोषमुक्त ग्रन्थ लिखने के लिये प्रेरित करती रहे।

इसी शुभाशीष और मङ्गल कामना के साथ-

जगद् गुरू शंकराचार्य आश्रम
पक्का घाट, बागपत।

रामस्वरूप ब्रह्मचारी
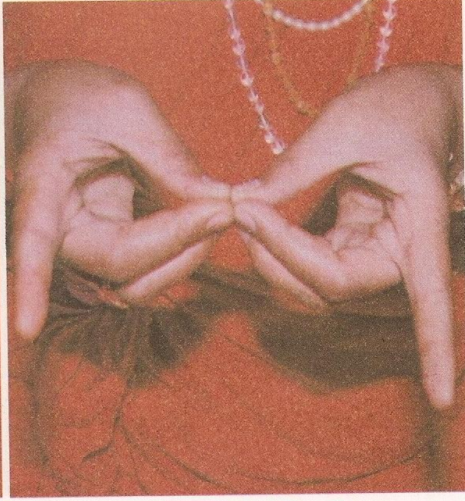
1 A सर्वसंक्षोभिणी

1 B सर्वसंक्षोभिणी

2 A सर्वविद्राविणी

2 B सर्वविद्राविणी

9 सर्वयोनि

20

श्री कुञ्जिका स्तोत्र

यह कुञ्जिका स्तोत्र अत्यन्त गुप्त और देवों के लिए भी दुर्लभ है। इस स्तोत्र के विषय में कहा गया है कि केवल इसके पाठ के द्वारा समस्त आभिचारिक कर्म जैसे मारण, मोहन, उच्चाटन, विद्वेषण, स्तम्भन व वशीकरण उद्देश्यों की स्वयं सिद्धि हो जाती है। इसके प्रभाव से देवी का जप सफल हो जाता है और किसी भी अन्य उपचार की आवश्यकता नहीं है।

¤ मन्त्र ¤

"ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे।। ॐ ग्लौं हुं क्लीं जूं सः ज्वालय ज्वालय ज्वल
ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ज्वल हं सं लं क्षं फट् स्वाहा।"

¤ स्तोत्र ¤

नमस्ते रुद्ररूपिण्यै नमस्ते मधुमर्दिनी
नमः कैटभहारिण्यै नमस्ते महिषार्दिनि।।१।।
नमस्ते शुम्भहन्त्रयै च निशुम्भासुरघातिनि
जाग्रतं हि महादेवि जपं सिद्धं कुरुष्व मे ।।२।।
ऐंकारी सृष्टिरूपायै ह्रींकारी प्रतिपालिका
क्लींकारी कामरूपिण्यै बीजरूपे नमोऽस्तु ते ।।३।।
चामुण्डा चण्डघाती च यैकारी वरदायिनी
विच्चे चाभयदा नित्यं नमस्ते मन्त्ररुपिणि ।।४।।
धां धीं धूं धूर्जटे पत्नी वां वीं वूं वाग्धीश्वरी।।
क्रां क्रीं कूं कालिका देवी शां शीं शूं मे शुभं कुरु ।।५।।
हुं हुं हुंकाररुपिण्यै जं जं जं जम्भनादिनी।

श्रां श्रीं श्रूं भैरवी भद्रे भवान्यै ते नमो नमः ॥६॥
अं कं चं टं तं पं यं शं वीं दुं ऐं वीं हं क्षं
धिजाग्रं धिजाग्रं त्रोटय त्रोटय दीप्तं कुरु कुरु स्वाहा ॥७॥
पां पीं पूं पार्वती पूर्णा खां खीं खूं खेचरी तथा
सां सीं सूं सप्तशती देव्या मन्त्रसिद्धिं कुरुष्व मे ॥८॥

(रुद्रयामल के गौरीतन्त्र से उद्धृत)

भावार्थ ॥ १ ॥

हे रुद्ररुपिणी ! तुम्हें नमस्कार । हे मधुमर्दिनी ! तुम्हें नमस्कार। कैटभ दैत्य को मारने वाली ! तुम्हें नमस्कार। हे महिषमर्दिनी ! तुम्हें नमस्कार है।

भावार्थ ॥ २ ॥

हे शुम्भ को मारने वाली! हे निशुम्भ को मारने वाली ! तुम्हें नमस्कार है।

भावार्थ ॥ ३ ॥

हे महादेवी ! मेरे जप को जाग्रत कर सिद्ध करो। **'ऐंकार'** के रूप में सृष्टि रुपिणी, **'ह्रीं'** के रूप में सृष्टि का पालन करने वाली।

भावार्थ ॥ ४ ॥

'क्लीं' के रूप में कामरुपिणी और बीजरुपिणी (ब्रह्माण्ड में) देवी! तुम्हें नमस्कार है। **'चामुण्डा'** के रूप में चण्ड दैत्य को मारने वाली और **'यैकार'** के रूप में तुम वरदायिनी हो।

भावार्थ ॥ ५ ॥

'विच्चे' रूप में तुम नित्य अभय देने वाली हो और मन्त्र रुपिणी हो।

भावार्थ ॥ ६ ॥

'धां धीं धूं' के रूप में धूर्जटी अर्थात शिव की पत्नी हो। **'वां वीं वूं'** के रूप में तुम वाणी की अधीश्वरी हो। **'क्रां क्रीं क्रूं'** के रूप में कालिका देवी **'शां शीं शूं'** के रूप में मेरा शुभ करो।

भावार्थ ॥ ७ ॥

'हुं हुं हुंकार' रुपिणी, **'जं जं जं'** जम्भनाशिनी **'भ्रां भ्रीं भ्रूं'** के रूप में हे कल्याणी भैरवी भवानी! तुम्हें बारम्बार नमस्कार।

भावार्थ ॥ ८ ॥

'अं कं चं टं तं पं यं शं वीं दुं ऐं वीं हं क्षं धिजाग्रं धिजाग्रं' इन सबको तोड़कर दीप्त करो। **'पां पीं पूं'** के रूप में तुम पार्वती पूर्णा हो। **'खां खीं खूं'** के रूप में तुम आकाशचारिणी तथा **'खेचरी'** मुद्रा हो।

'सां सीं सूं' स्वरूपिणी सप्तशती देवी के मन्त्र को मेरे लिए सिद्ध करो।

卐 卐 卐

22

श्री चक्र रहस्य (सचित्र)

श्री विद्या' पूजन में स्थान-स्थान पर चक्रों में ध्यान अथवा भावना करने हेतु निर्देश दिये गये हैं। अत: प्रत्येक साधक को श्रीचक्र करने से पूर्व शरीर मे स्थित आधारों (चक्रों) की जानकारी होना परम् आवश्यक है। स्थित चक्रों का स्वरूप, रंग, देवता, बीज, तत्व, स्थान, लोक आदि क्या हैं तथा सम्बन्धित चक्र शरीर में कहाँ स्थित हैं; इसका ज्ञान होना भी अति आवश्यक है, इसीलिए इस खण्ड में हमने पूर्ण प्रयास किया है कि साधकों को चक्रों का सामान्य ज्ञान हो सके। विषय को युक्तियुक्त बनाने हेतु चित्र भी दिये गये हैं।

यह शरीर विविध जटिलताओं सें युक्त, ईश्वर की अनुपम कृति है। साधारण व्यक्ति इसकी जटिलताओं को समझने में भले ही असफल हों, परन्तु योगीजनों ने इसकी जटिलता का रहस्य ना जाने कितने समय पूर्व ही सुलझा लिया था। इस प्रकार यह शरीर भले ही कितना भी जटिल है, परन्तु योग्य गुरु के पथ-प्रदर्शन में पूर्णत: गम्य है। निम्नाङ्कित चित्र के द्वारा शरीरस्थ चक्रों की स्थिति को प्रदर्शित किया गया है। जिसके अनुसार सात चक्र प्रदर्शित किये गये हैं तथा वह चक्र कितने कमल दल के रूप में हैं, यह भी स्पष्ट किया गया है।

वेदों में वर्णित आद्याशक्ति श्री त्रिपुरा को ही कुण्डलिनी शक्ति कहा गया है; जो देवी, महादेवी, शिवा, प्रकृति आदि अनेक नामों से ज्ञातेय हैं। इन प्राणशक्तियों की केन्द्रीयभूत शक्ति को ही देवी-कुण्डलिनी का नाम दिया गया है। शरीरस्थ समस्त गति और क्रिया शक्ति का आधार कुण्डलिनी शक्ति ही है। मनुष्य के मेरूदण्ड के उभय पार्श्व में इड़ा व पिङ्गला नामक दो नाड़ियाँ हैं। इन दोनों नाड़ियों के मध्य में एक अति सूक्ष्म नाड़ी है, जो सुषुम्ना कहलाती है। यही सुषुम्ना नाड़ी सूक्ष्म, ज्ञानवाहक और गतिवाहक है। यह मेरूदण्ड के भीतर छिपी रहती है और स्वयं पूर्ण प्रकाशमान है। इसी प्रकाश से यह पूरे शरीर को आलोकित करने में समर्थ है। जहाँ-जहाँ यह नाड़ी गुच्छों के रूप में होती है वह स्थान चक्र के रूप में दिखाई देता है।

गुदा और लिंग के मध्य एक योनि मण्डल है (कन्द स्थान), उसी स्थान में कुण्डलिनी समस्त नाड़ियों को वेष्टित करती हुई, साढ़े तीन कुण्डल बनाकर अपनी पूँछ को मुँह में लिए सुषुम्ना के छिद्र को बन्द करके सर्पिणी के समान रहती है, जो निद्रित अवस्था में रहती है और सत्व, रज व तमोगुणों की जननी है।
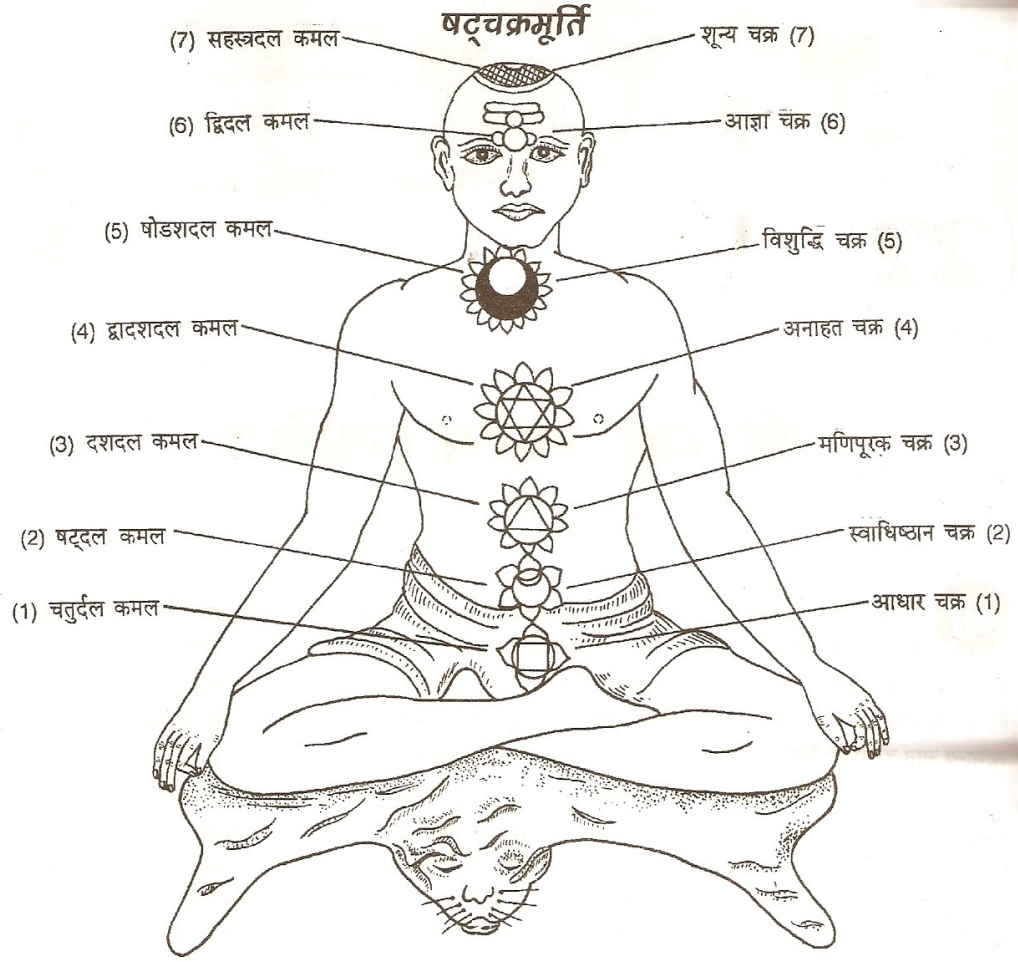
प्राणायाम, मुद्राओं तथा भावनाओं के द्वारा इसका धीरे-धीरे जाग्रण होता है। जाग्रत हो जाने के उपरान्त यह शरीर के सभी चक्रों का भेदन करती हुई सहस्रार में मिलती है, जो शिव का स्थान कहा गया है। उन्हीं परम शिव के साथ इस शक्ति के मिलने से मनुष्य स्वयं ब्रह्म के समान हो जाता है और अष्टसिद्धि और नवनिधियों का स्वामी बनता है। इस स्थिति में मनुष्य को बुढ़ापा, मृत्यु, भूख, प्यास कुछ नहीं सताता है और वह अलौकिक हो जाता है।

¤ आधार चक्र ¤

गुदा से थोड़ा ऊपर, चतुर्दल कमल के समान यह मूलाधार चक्र है। इसकी चारों पंखुड़ियों में व, श, ष, स, ये चार बीज अक्षर हैं। इसमें पृथ्वी तत्व तथा भगवान गणेश की भावना की जाती है इसके उपरान्त सश्रद्धा गणेश जी की मानस पूजा, जप और कुण्डलिनी शक्ति के जागरण के लिए उनसे प्रार्थना करनी चाहिये।

लोक - भू
गुण - गन्ध
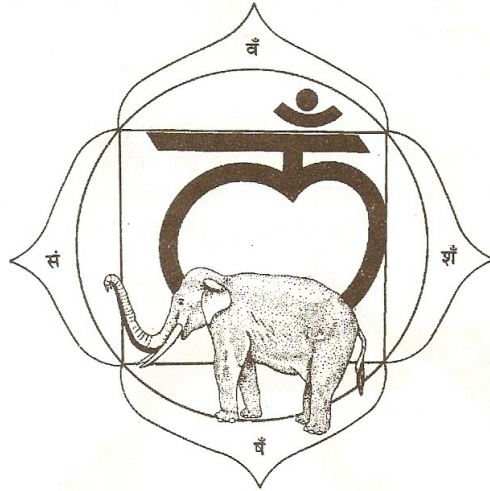
नाम - आधार चक्र
स्थान - योनि
वर्ण - रक्त
तत्व - पृथ्वी
तत्व बीज - लँ
बीज का वाहन-ऐरावत हाथी
गुण - गन्ध
देव - ब्रह्मा
यन्त्र - चतुष्कोण
देवशक्ति - डाकिनी
ज्ञानेन्द्रिय - नासिका
कामेन्द्रिय - सुदा
आकृति - झूण्ड

आधार चक्र

अंग्रेजी नाम

(Pelvic Plexus)

¤ स्वाधिष्ठान चक्र ¤

मूलाधार के ऊपरी भाग में, अर्थात गुदा और लिङ्ग के मध्य देश में स्वाधिष्ठान नामक द्वितीय चक्र का चिन्तन किया जाता है। यह चक्र छः पंखुड़ियों (दलों) वाला होता है। इन दलों में ब से ल तक छः बीज अक्षर हैं।

नाम - स्वाधिष्ठान चक्र
स्थान - पेडू
वर्ण - सिन्दूर
लोक - भुवः
दल अक्षर - बँ से लँ तक
नाम तत्व - जल
तत्वबीज - वँ
बीज का वाहन - मकर

अंग्रेजी नाम

Hypogastric Plexus

गुण - रस
देव - विष्णु
देवशक्ति - राकिनी
यन्त्र - चन्द्राकार
ज्ञानेन्द्रिय - रसना

स्वाधिष्ठान चक्र

इनमें जल तत्व और ब्रह्मा जी देवता हैं। इस चक्र में ब्रह्माजी की मानसिक पूजा आदि करते हैं। इसका रंग दूध से भ स्वर्णिम कटोरे के समान होता है। ध्यान अभ्यास के उपरान्त इससे उठने वाली वाष्प मन व प्राणों को पूर्ण तृप्त करत है। इसके दर्शन से ब्रह्मचर्य स्थिर व दृढ़ होता है।

¤ मणिपूरक चक्र ¤

इस चक्र का स्थान नाभि प्रदेश है। इस चक्र में दश कमलदल हैं। जिसमें ड से फ तक दश वर्ण बीज अक्ष हैं। इनमें अग्नि तत्व तथा विष्णु भगवान देवता हैं। नाभि प्रदेश में हजारों नाड़ियों का गुच्छा सा रहता है यहीं यह चक्र सा बन जाता है और सूर्य की रश्मियों के समान प्रतीत होता है। इसका स्वरूप अग्नि के समान होता है। इस केन्द्र प ध्यान करने से दिव्य आभा प्रतीत होती है जिससे आन्तरिक शरीर पूर्ण ज्योतिर्मय हो जाता है।
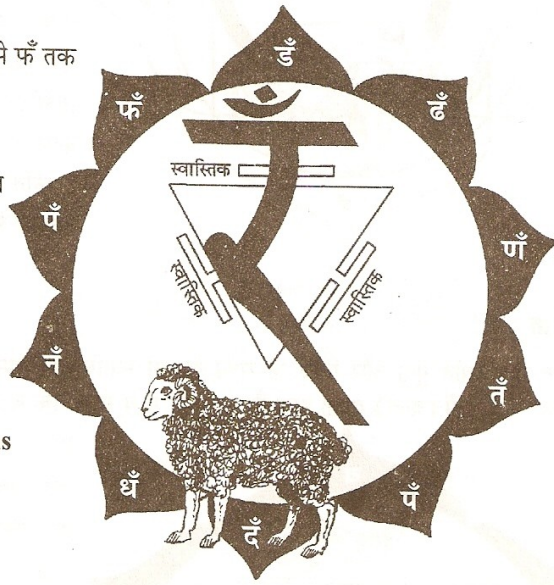
मणिपूरक चक्र

४. ¤ अनाहत चक्र ¤

अनाहत चक्र का कमल बारह दलों वाला होता है। इसमें क से ठ तक बारह वर्ण बीज अक्षर हैं। ज्ञानी लोग इस चक्र को "हत् चक्र" भी कहते हैं। छाती में दोनों फुफ्फुसों के पास इसका स्थान है। जीवात्मा का निवास स्थल इसी चक्र को माना गया है। इसका ध्यान करने से साधक को साक्षात ब्रह्म की प्राप्ति होती है। इस चक्र में वायु तत्व और रुद्र देवता हैं; अतः साधक को इनका भी मानसिक जप व पूजन करना होता है।

नाम – अनाहत चक्र
स्थान – हृदय
दल – द्वादश
वर्ण – अरुण
लोक – मह
दलों के अक्षर – कँ से ठँ तक
नाम तत्व – वायु
तत्व बीज – यँ

अंग्रेजी नाम
Cardiac Plexus

बीज का वाहन – मृग
गुण – स्पर्श
देव – ईशान रुद्र
देवशक्ति – काकिनी
यन्त्र – षट्कोण
ज्ञानेन्द्रिय – त्वचा
कर्मेन्द्रिय – कर (हाथ)

अनाहत् चक्र

¤ **विशुद्धि चक्र** ¤

अनाहत चक्र से आगे कण्ठदेश में विशुद्धि चक्र हैं। यह सोलह पंखुड़ियों वाला कमल है और समस्त

नाम – आज्ञा चक्र
स्थान – भ्रूमध्य
दल – द्विदल
वर्ण – श्वेत
दलों के अक्षर – हँ क्षँ
नाम तत्व – महत्तल
तत्वबीज – ॐ
बीज का वाहन – नाद

अंग्रेजी नाम
Carotid Plexus
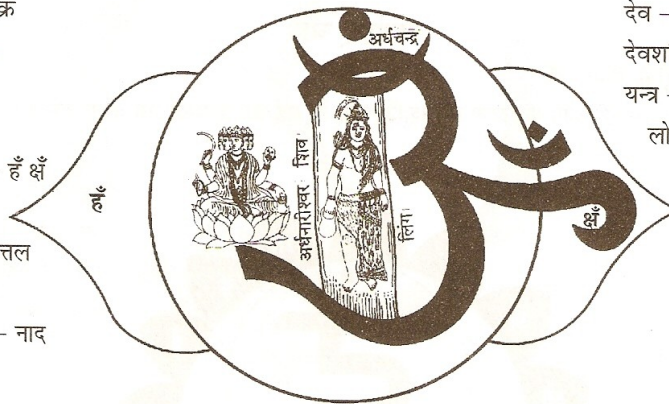
देव – लिंग
देवशक्ति – हाकिनी
यन्त्र – लिंगाकार
लोक – तपः

विशुद्धि अथवा विशुद्धारव्य चक्र

स्वर-वर्ण इसके बीज अक्षर हैं। इनमें आकाश तत्व तथा चन्द्रमा देवता हैं। इनकी पूजा भी मानसिक और बाह्य रूप से करनी होती है। जब साधक अपनी साधना शक्ति से इस चक्र में प्रवेश करता है तब उसका मन बिल्कुल शान्त और स्थिर हो जाता है। भूख-प्यास समाप्त हो जाती है। साधक काव्य रचना में समर्थ, ज्ञानवान, उत्तम वक्ता, शान्त चित्त, त्रिलोकदर्शी, सर्वहितकारी, आरोग्य, चिरंजीवी और तेजस्वी होता है।

¤ आज्ञा चक्र ¤

आज्ञा चक्र दोनों भौंहों के मध्य देश में स्थित है, जिसमें दो दल कमल हैं। हं, सः, ये दो यहाँ के बीज अक्षर हैं और इनके देवता सदाशिव हैं। यहाँ पर सदैव 'सोऽहं' का जप होता है। जब साधक इस चक्र में प्रवेश करता है तो दीप की जलती हुई लौ के समान ज्योति स्पष्ट होती है। इस चक्र तक पहुँचकर साधक दूर स्थित पदार्थ घटनाएँ आदि देख सकता है। अर्थात् उसे दिव्य दृष्टि प्राप्त हो जाती है। इस चक्र की जागृति होने पर साधक के कुछ भी सोचते ही वह कार्य तुरन्त सम्पन्न हो जाता है। आज्ञा चक्र को साधने के उपरान्त ही साधक सहस्रार अथवा ब्रह्मरन्ध्र का भेदन कर सकता है।

आज्ञा चक्र

¤ शून्य चक्र ¤

शून्य चक्र को सहस्रार और ब्रह्मरन्ध्र भी कहा जाता है। आज्ञा चक्र का भेदन करने के उपरान्त ही साधक इस चक्र का भेदन कर सकता है। इस चक्र का स्थान मस्तक में भ्रू मध्य से लगभग तीन इंच ऊपर ज्योतिपिण्ड के समान प्रतीत होता है। तीव्र अलौकिक प्रकाश के हजारों पुंज इस चक्र को प्रकाशित करते रहते हैं, इसलिए इसका नाम सहस्रार चक्र है। यह स्थान तत्वातीत है। निर्गुण, निराकार, शुद्ध चेतन परमात्मा यहाँ प्रकाश रूप में स्थित है; इस परमात्मा में ही साधक को स्वयं को लय करना होता है, जिसके उपरान्त साधक अमर, उत्पत्ति पालन में समर्थ होकर आकाशगामी और समाधियुक्त हो जाता है।

नाम चक्र – शून्य
स्थान – मस्तक
दल – सहस्त्र
दलों के अक्षर – अं से क्षं तक
लोक – सत्य
पूर्ण चन्द्र
नाम तत्व – तत्वातीत
तत्व बीज – विसर्ग
बीज का वाहन – बिन्दू
देव – परब्रह्म
देवशक्ति – महाशक्ति
यन्त्र–पूर्ण–चक्र निराक
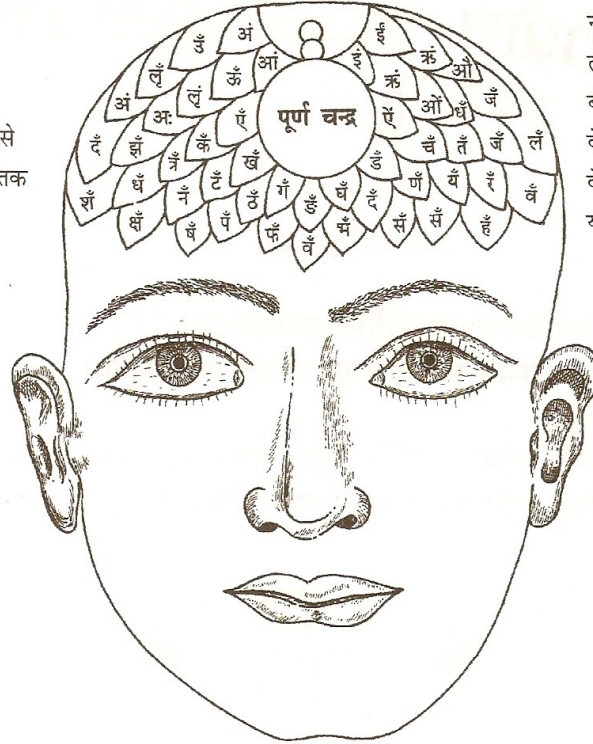
षोडशी महाविद्या

(श्री महात्रिपुर सुन्दरी साधना, श्री यन्त्र पूजन पद्धति एवं स्तवन)
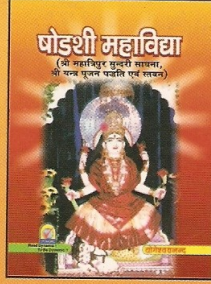
पुस्तक के विषय में

षोडशी–साधना– दशों महाविद्याओं में से एक आद्याशक्ति श्री विद्या राजराजेश्वरी हैं, जिन्हें ललिता, त्रिपुर सुन्दरी, षोडशी आदि नामों से पुकारा जाता है। वे ही संसार के समस्त प्रपंचो की अधिष्ठात्री, शिवशक्ति से सम्पन्न जगत् की उत्पत्ति, पालन एवं संहार करने वाली हैं। अन्य देवी–देवताओं की उपासना से या तो भोग की प्राप्ति होती है या फिर मोक्ष की । परन्तु श्री विद्या उपासकों को भोग और मोक्ष दोनो की प्राप्ति होती है। यही वह शक्ति हैं जो साधक को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चतुर्दिक पुरुषार्थ प्राप्त करनें में सक्षम है।

लेखक के विषय में

अंग्रेजी साहित्य में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त करने के उपरान्त अपनी आध्यात्मिक प्रवृति एवं मन्त्र–तन्त्र जैसे गूढ़ विषयों में रुचि होने के कारण श्री योगेश्वरान्द (गुरु प्रदत्त नाम) उच्च कोटि के साधक पण्डित गजेन्द्र प्रसाद जी के सानिध्य में आये और उनसे आध्यात्मिक दीक्षा ग्रहण की। वहीं उनका परिचय स्वामी आदित्य जी से हुआ, जिनकी साधना स्थली पौड़ी में थी। अतः ज्ञान पिपाशु श्री योगेश्वरानन्द भी उनके साथ पौड़ी चले गये और उनसे साधना सम्बन्धी गूढ़ एवं विस्तृत ज्ञान प्राप्त किया।

तद्पोरान्त आप श्री निश्चलानन्द अघोरी के सम्पर्क में आये और उनके सानिध्य में कई साधनाएं सम्पन्न की। परन्तु आपकी यात्रा को विराम नहीं मिला अतः "माँ पीताम्बरा" और "श्रीविद्या" के अद्वितीय उपासक ब्रह्मचारी श्री रामस्वरुप जी के सानिध्य में आये और आज भी आप उन्हीं से जुड़े हुए हैं।

श्री योगेश्वरानन्द जी की धारणा है कि समाज से दूर साधना में रत रहना केवल स्वार्थ है। सच्चा साधक वही है, जो समाज में रहते हुए अपने दायित्वों का निर्वहन करने के साथ–साथ मुक्ति का मार्ग भी प्रशस्त करे । परिणामस्वरुप वर्ष 1985 से आप न्याय विभाग में सेवारत रहते हुए भी निरन्तर साधनारत हैं, जो आपकी धारणा का पुष्ट प्रमाण है।

यद्यपि इस सम्प्रति काल में भारतीय मनीषियों की महान देन जो आध्यात्मिक साधना और उससे मानवता को प्राप्त होने वाले लाभ के सम्बन्ध में है, अतुलनीय है। परन्तु समाज में फैले हुए आडम्बर, धोका–धड़ी एवं निज स्वार्थ–साधना में रत कतिपय स्वयंभु गुरु इसे प्रदूषित कर रहे हैं। अतः लेखक ने इनसे विक्षुब्ध होकर परम गूढ़ एवं गोपनीय साधनाओं, उनके वास्तविक स्वरूप एवं लाभ को जन–सामान्य तक पहुंचाने का सबल एवं सरल प्रयास "मन्त्र–साधना", "यन्त्र–साधना", "बगलामुखी–साधना एवं सिद्धि", तथा "षोडशी–महाविद्या" जैसी अद्वितीय श्रृंखलाबद्ध कृतियों के माध्यम से किया है।

हमें आशा ही नही अपितु पूर्ण विश्वास है कि सुधी पाठक एवं साधक इन कृतियों के माध्यम से अवश्य ही लाभानिव्त होगें।

मूल्यः रु० 250.00

ISBN 81-7933-192-X
9788179331927

डायनेमिक पब्लिकेशन्स (इण्डिया) लि०
न्यूयॉर्क • लन्दन • दिल्ली • सिंगापुर • मैलबोर्न

About The Author

Name Shri Yogeshwaranand
Contact No. +919917325788(India),+919410030994

Books Written
1. Mahavidya Shri Baglamukhi Sadhna Aur Siddhi
2. Shodashi Mahavidya
3. Mantra Sadhna
4. Baglamukhi Sadhna (In English Being Written)
5. Agam Rehasya
6. Shatkarma Vidhana
7. Aghora

And Lots of Books are in press which are about to come and will be available soon in the market.